INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HINDI MEDIUM

राजस्थान
BSTC
(Pre. D.El. ED)

HANDWRITTEN NOTES

भाग-1 राजस्थान का सामान्य ज्ञान + रीजनिंग

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान
BSTC
(PRE.D.EI.ED)

भाग – 1

राजस्थान का सामान्य ज्ञान + रीज़निंग

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान BSTC (Pre. D.El.Ed.)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को "**प्रारंभिक शिक्षा विभाग –बीकानेर**" द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान BSTC (Pre. D.El.Ed.)**" **की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/l6dgy4

Online Order करें - https://bit.ly/bstc-notes

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

राजस्थान का भूगोल		
क्र.सं .	अध्याय	पेज नं.
1.	राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार	1
2.	राजस्थान के भौतिक प्रदेश	6
3.	राजस्थान की नदियाँ	12
4.	राजस्थान की झीलें	17
5.	राजस्थान के प्रमुख जलवायु क्षेत्र	20
6.	राजस्थान में वनवन्यजीव एवं वनस्पति ,	21
7.	राजस्थान में कृषि एवं प्रमुख फसलें	25
8.	राज्य की प्रमुख सिंचाई एवं बहुद्देशीय परियोजनाएं	28
9.	राजस्थान में पशुधन	30
10.	राजस्थान में प्रमुख खनिज क्षेत्र एवं संसाधन	32
11.	राजस्थान में जनसंख्या वितरण ,विकास , और लिंगानुपात ,साक्षरता	34
12.	राजस्थान के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र एवं उद्योग	41

राजस्थान का इतिहास		
1.	इतिहास जाननें के स्रोत	43
2.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं	49
3.	गुर्जर प्रतिहार वंश	52
4.	मेवाड़ का इतिहास	55
5.	मेवाड़मारवाड़ सम्बन्ध-	60
6.	राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश	66
7.	'कच्छवाहा' वंश	75
8.	बीकानेर के वंशज	79
9.	किशनगढ़ का राठौड़ वंश एवं राजस्थान के अन्य वंश	86
10.	राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां	91
11.	राजस्थान में 1857 की क्रांति	94
12.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	99
13.	प्रजामंडल आंदोलन	109
14.	राजस्थान का एकीकरण	112
15.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	117

राजस्थान की कला एवं संस्कृति		
1.	राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	124
2.	राजस्थान के किलेमहल एवं हवेलियाँ ,	129
3.	राजस्थान के प्रमुख मंदिर	137
4.	राज्य का साहित्य एवं बोलियाँ	138
5.	राज्य की चित्रकला	142
6.	राजस्थान की हस्तकला	147
7.	राजस्थान के प्रसिद्द मेले	148
8.	राजस्थान के प्रमुख त्यौहार	150
9.	राजस्थान के प्रमुख लोकगीत एवं लोक नृत्य	153
10.	राजस्थानी पहनावा एवं आभूषण	157
11.	सामाजिक रीत रिवाज एवं प्रथाएँ	159
12.	राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय	162
13.	प्रमुख पर्यटन केंद्र	167

राजस्थान की राजव्यवस्था		
1.	राज्यपाल	170
2.	मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्	177
3.	राज्य विधानसभा	185
4.	उच्च न्यायालय	194
5.	राजस्थान लोक सेवा आयोग	202
6.	राजस्थान में जिला प्रशासन	203
7.	राज्य मानवाधिकार आयोग	208
8.	लोकायुक्त	210
9.	राज्य निर्वाचन आयोग	212
10.	राज्य सूचना आयोग	214
11.	राजस्थान विविध	216
क्र. सं.	रीज़निंग	पेज नं.
1.	श्रृंखला	270
2.	सादृश्यता	286
3.	वर्गीकरण	300

4.	संक्रियाएं	304
5.	लुप्त संख्या	314
6.	कोडिंग – डिकोडिंग	319
7.	दिशा परीक्षण	327
8.	रक्त संबंध	333
9.	क्रम व्यवस्था	343
10.	घड़ी	350
11.	कैलेंडर	358
12.	वेन आरेख	370
13.	आकृतियों की गणना	374
14.	आकृति पूर्ति	377
15.	न्यान नियमन	382
16.	डाटा पर्याप्तता	396

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान का विस्तार -

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30° 12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है।

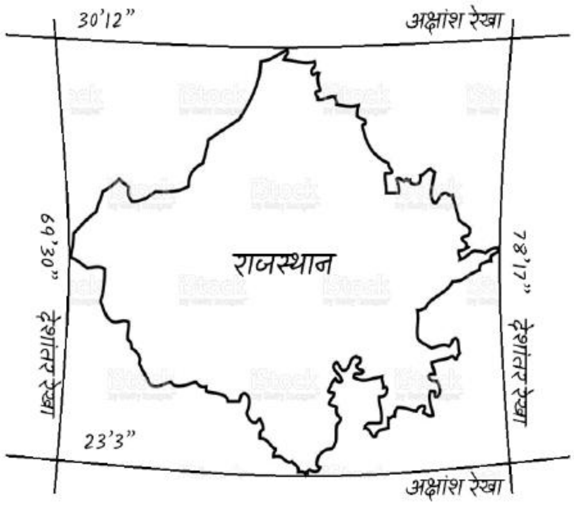

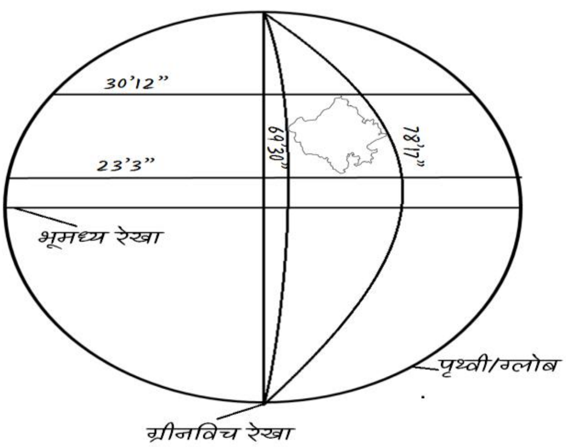

नोट :- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार 7° 9"(30°12" 23°3") है तथा कुल देशांतरीय विस्तार 8°47" (78°17" 69°30") है।

1° = 4 मिनट

1° =111.4 किलोमीटर होता है।

अक्षांश रेखाएँ :- वह रेखाएँ जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है।

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180° डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएँ :- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है। ग्रीनविच, जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है,से गुजरने वाली यामोत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180° डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

- राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था । लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया ।
- 2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 थी, जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

कर्क रेखा राजस्थान में स्थिति :-

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है- 1.गुजरात 2.राजस्थान 3.मध्यप्रदेश 4.छत्तीसगढ़ 5.झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7.त्रिपुरा 8.मिजोरम

ट्रिक- राम झा के छः पंगु मित्र थे ।

राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिलें के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है । इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिलें को भी स्पर्श करती है, अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है ।

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है । राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है । राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है ।

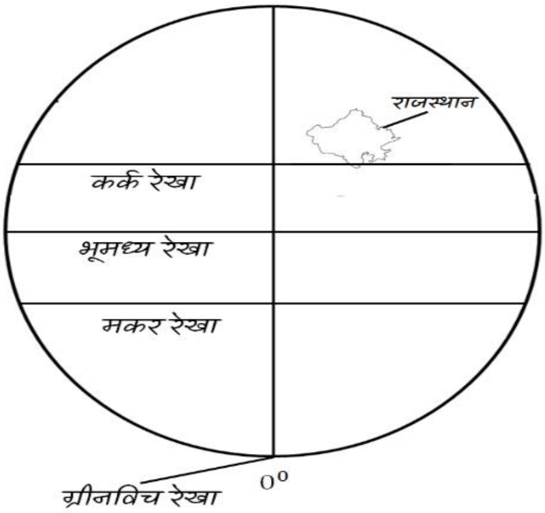

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है । जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है ।

राजस्थान में बाँसवाड़ा जिलें में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण :- बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है, तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है ।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए, एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

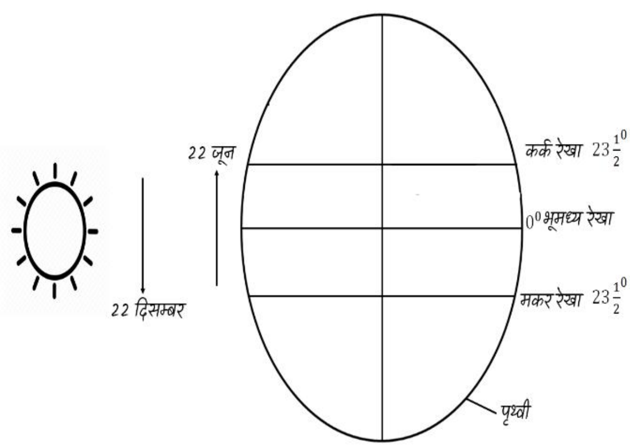

(निम्न मानचित्र को ध्यान से समझिए) –

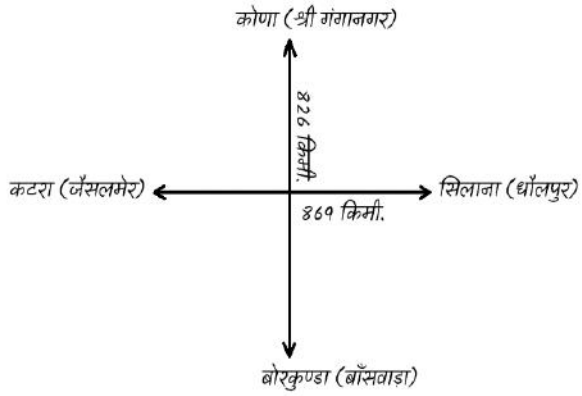

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने

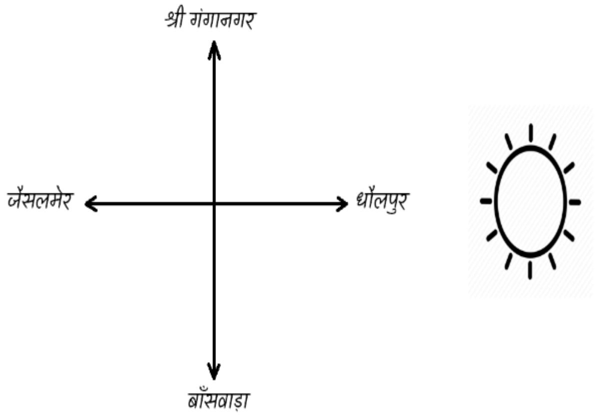

आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

<u>विस्तार :-</u>राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिलें के कोणा गांव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिलें की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

इसी प्रकार पूर्व से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरव में धौलपुर जिलें के सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिलें के कटरा गांव तक है ।

<u>आकृति :-</u>

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है ।

राज्य की स्थलीय सीमा5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा :-

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है । इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है । इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3,310 किलोमीटर है ।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के चार राज्य स्थितहैं।

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
2. पंजाब (547 कि.मी.)
3. राजस्थान (1070 कि.मी.)
4. गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा राजस्थान के चार जिलों से लगती है।

1. श्रीगंगानगर - (210 कि.मी.)
2. बीकानेर - (168 कि.मी.)
3. जैसलमेर - (464 कि.मी.)
4. बाड़मेर - (228 कि.मी.)

रैडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में गंगानगर के हिंदुमल कोट से लेकर दक्षिण में बाड़मेर के शाहगढ़ बाखासर गाँव तक विस्तृत है।

पाकिस्तान के दो राज्य (प्रांत) राजस्थान से छुते हैं।

1. पंजाब प्रांत 2. सिंध प्रांत

रेडक्लिफ पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला :- जैसलमेर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्रफल में छोटा जिला :- श्रीगंगानगर

राजस्थान के केवल अन्तराष्ट्रीय सीमा वाले जिलें - 2 (बीकानेर, जैसलमेर)

राजस्थान के परिधिय जिलें :- 25

राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलें :- 23

राजस्थान के केवल अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलें :- 21

राजस्थान के 2 ऐसे जिलें है, जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है :- गंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब), बाड़मेर(पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमाएँ :-

पंजाब (89 कि.मी.)

राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिलें फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती हैं । पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है।

हरियाणा (1262 कि.मी.) :-

राजस्थान के 7 जिलों की सीमा हरियाणा के 7 जिलों (सिरसा, फतेहबाद, हिसार, भिवाड़ी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात) से लगती है। हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा जयपुर की लगती हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला चुरू व छोटा जिला झुंझुनू है ।

उत्तरप्रदेश (877 कि.मी.) :- राजस्थान के दो जिलों की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथुरा व आगरा) से लगती है। उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम धौलपुर की लगती है।

मध्यप्रदेश (1600 कि.मी.) :-

राजस्थान के 10 जिलों की सीमा मध्य प्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है।(झाबुआ, रतलाम, मंदसौर,निमच, अगरमालवा, राजगढ, गुना, शिवपुरी, श्योंपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है ।

गुजरात (1022 कि.मी.) :-

राजस्थान के 6 जिलों की सीमा गुजरात के 6 जिलों से लगती है। (कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद)गुजरात के साथ सर्वाधिक सीमा उदयपुर व न्यूनतम सीमा बाड़मेर की लगती है।

तथ्य :-

26 जनवरी, 1950 को संवैधानिक रूप से हमारे राज्य का नाम राजस्थान पड़ा।

राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में 1 नवम्बर, 1956 को आया । इस समय राजस्थान में कुल 26 जिलें थे ।

26 वाँ जिला – (अजमेर-1 नवम्बर, 1956)

27 वाँ जिला-धौलपुर- (15 अप्रैल, 1982), यह भरतपुर से अलग होकर नया जिला बना।

28 वाँ जिला- बारा- (10 अप्रैल, 1991), यह कोटा से अलग हो कर नया जिला बना ।

29 वाँ जिला-दौसा- (10 अप्रैल , 1991), यह जयपुर से अलग होकर नया जिला बना ।
30 वाँ जिला राजसमंद- (10 अप्रैल, 1991), यह उदयपुर से अलग हो कर नया जिला बना ।
31 वाँ जिला-हनुमानगढ़- (12 जुलाई, 1994), यह श्रीगंगानगर से अलग होकर नया जिला बना।
32 वाँ जिला करौली (19 जुलाई, 1997), यह सवाईमाधोपुर से अलग होकर नया जिला बना ।
33 वाँ जिला-प्रतापगढ़-(26 जनवरी, 2008), यह तीन जिलों से अलग हो कर नया जिला बना।
राजस्थान का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला जैसलमेर (38401 वर्ग कि.मी.) है।

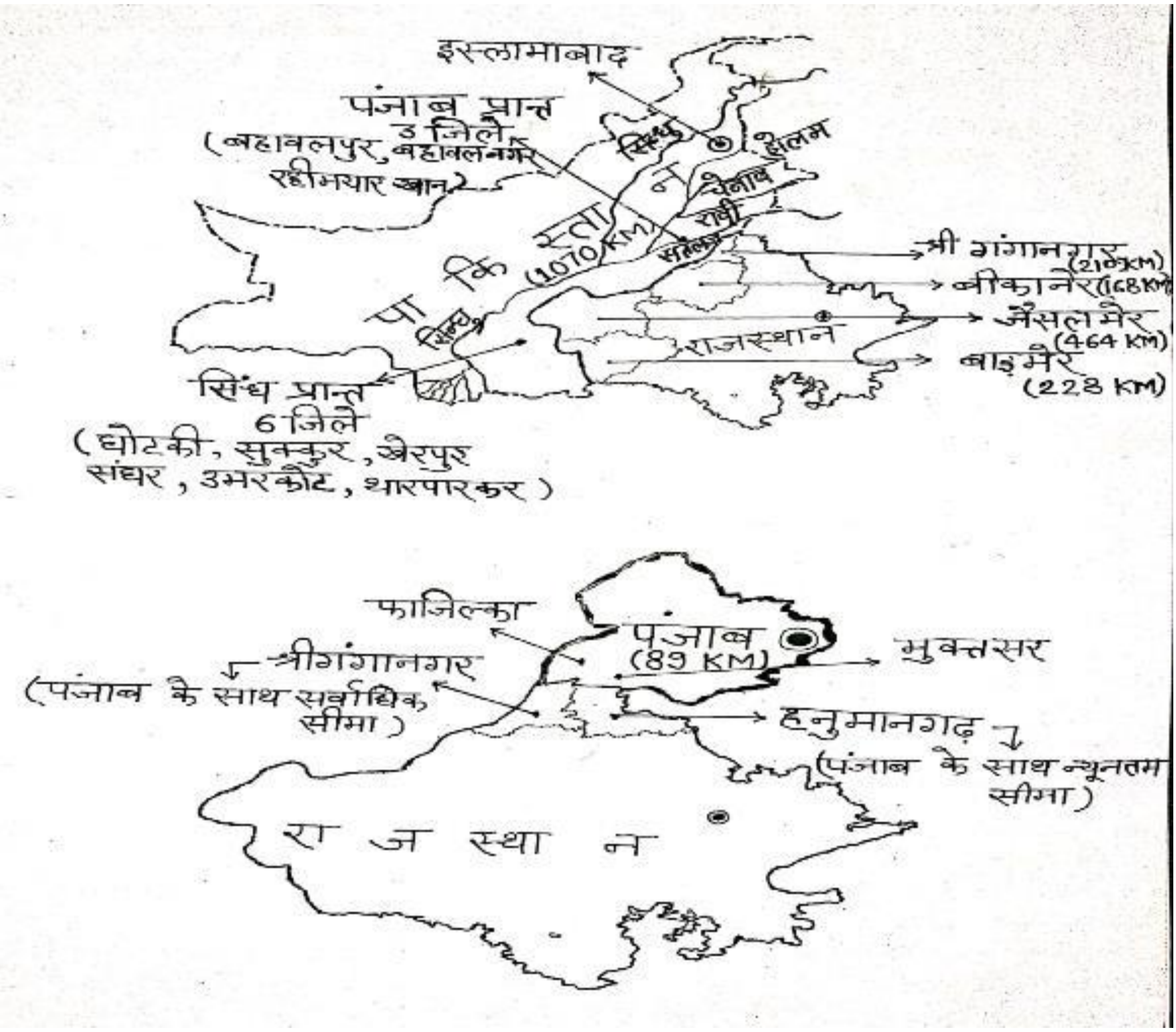

संभाग –संभागीय व्यवस्था की शुरुआत 1949 में हीरा लाल शास्त्री सरकार द्वारा की गई । अप्रैल, 1962 में मोहनलाल सुखाडिया सरकार के द्वारा इसे समाप्त कर दिया गया। 15 जनवरी, 1987 में हरिदेव जोशी सरकार के द्वारा इसकी पुनः शुरुआत द्वारा की गई।

1. जयपुर संभाग- जयपुर, दौसा, सीकर, अलवर, झुंझुनू ।
2. जोधपुर संभाग- जोधपुर, जालौर, पाली, बाड़मेर, सिरोही, जैसलमेर ।
3. भरतपुर संभाग- भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर ।
4. अजमेर संभाग- अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक, नागौर।
5. कोटा संभाग- कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़
6. बीकानेर संभाग - बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु ।
7. उदयपुर संभाग- उदयपुर, राजसंमद, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ ।

<u>अंतर्राष्ट्रीय सीमा :-</u>

अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले संभाग- बीकानेर व जौधपुर
सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग- जौधपुर

मुख्य नदियां माही, जाखम, सोम, चाप अनास, एराव है।

(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

यह राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित मालवा के पठार का विस्तार माना जाता है। इसकी निम्नलिखित भौतिक विशेषताएं हैं -

1. इसका विस्तार राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग में मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ में स्थित है इसका क्षेत्रफल राज्य की कुल क्षेत्रफल का 7% हिस्सा में है जिस पर राज्य की कुल जनसंख्या का 11% हिस्सा निवास करता है।
2. यहां की जलवायु आद्र एवं अति - आद्र जलवायु पाई जाती है।
3. इस प्रदेश में मुख्य रूप से काली एवं लाल मिट्टियां पाई जाती हैं।
4. इस प्रदेश में मुख्य रूप से कपास, गन्ना, चावल, खट्टे रसदार फल, सब्जियां आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है झालावाड़ में मौसमी / संतरा सर्वाधिक होता है

अध्याय – 3

राजस्थान की नदियाँ

अपवाह तंत्र -

जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं तब उसे अपवाह तंत्र कहते हैं ।अपवाह तंत्र में नदियां एवं उसकी सहायक नदियां शामिल होती हैं।

(अ)बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ :

इस अपवाह तंत्र में निम्न प्रमुख नदियां शामिल होती हैं जैसे चंबल, बनास, काली सिंध, पार्वती, बाण गंगा, खारी, बेडच, गंभीरी आदि।

(ब) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ :-

इस अपवाह तंत्र में इन निम्न प्रमुख नदियां शामिल हैं जैसे माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, इत्यादि ।

(स) अंतः प्रवाह वाली नदियां -

कुछ छोटी नदियां जो कुछ दूरी तक प्रभाव में होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियां कहा जाता है ।

चंबल नदी- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्यीय सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है, चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी।

- इस नदी की कुल लंबाई 966 किलों मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में 335 किलों मीटर, राजस्थान में 135 किलों मीटर, उत्तरप्रदेश में 275 किलों मीटर बहती है यह नदी राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य 241 किलों मीटर की अंतर्राज्यीय सीमा भी बनाती है।
- इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश राज्य के इंदौर जिलें हुआ । क्षेत्र के विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊंची "जाना पाव की पहाड़ी" से होता है मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बांध "गांधी सागर बांध" बना हुआ है।

चम्बल नदी एवं इसकी सहायक नदियाँ

- राजस्थान की कामधेनु
- प्राचीन नाम – चर्मण्वती
- कुल लम्बाई लगभग 965 किमी.
- राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा पर 241 KM लम्बी
- राजस्थान के अन्दर 135 KM लम्बी
- राजस्थान में कुल लम्बाई (241+135) = 376 किमी.

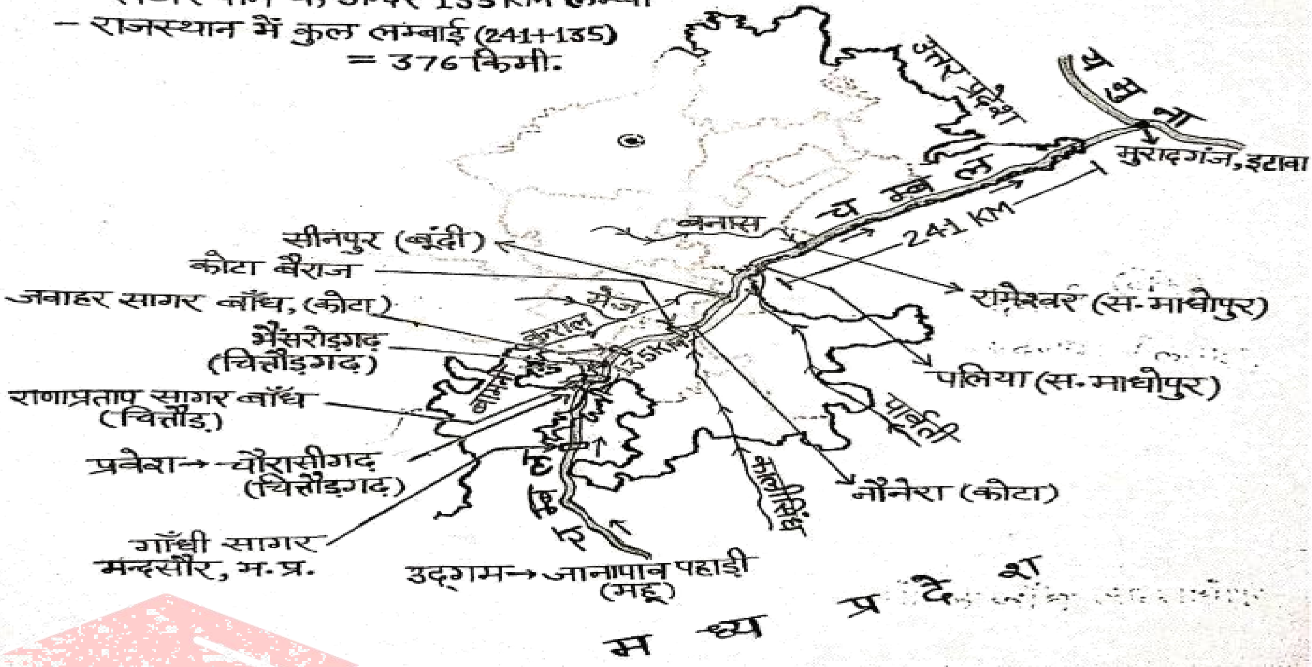

यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है इस नदी पर भैंसरोडगढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।

- चंबल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिलें के रावतभाटा नामक स्थान पर राणाप्रताप सागर बांध बना हुआ है, जो कि जल भराव की क्षमता से राज्य का सबसे बड़ा बांध है इस बांध का 113 वर्ग किलों मीटर में फैला हुआ है।
- अंत में यह नदी उत्तरप्रदेश राज्य के इटावा जिलें के मुरादगंज कस्बे में 275 किलों में किलों मीटर बहने के बाद यमुना में मिल जाती है यह यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

चंबल की सहायक नदियां –

- मध्यप्रदेश में मिलने वाली नदियां -सींवान, रेतम, शिप्रा।
- राजस्थान में मिलने वाली नदियां - आलनिया, परवण, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामणी, कुराल, छोटी काली सिंध आदि

चंबल नदी पर चार बांध बनाए गए हैं -

1. गांधी सागर बांध - मध्यप्रदेश की भानपुरा तहसील में
2. राणाप्रताप सागर बांध - रावतभाटा, (चित्तौड़गढ़).
3. जवाहर सागर बांध - बोरा बास, कोटा
4. कोटा बैराज बांध - कोटा शहर

2. <u>बनास नदी -</u>

- बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिलें में स्थित खमनोर की पहाड़ियां से होता है पूर्णतः प्रवाह के आधार पर यह राजस्थान की सबसे लंबी नदी है इसकी कुल लंबाई 480 किलों मीटर है।
- इस नदी को अन्य नामों से जाना जाता है। जैसे वन की आशा, वर्णाशा, वनआशा, वशिष्ठ नदी।
- यह नदी 6 जिलों में बहती है यह 6 जिलें क्रम से हैं राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर ।इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में भूरी मिट्टी के क्षेत्र का प्रसार पाया जाता है।

● **नोट** -बीसलपुर बांध का निर्माण अजमेर के चौहान शासक विग्रह राज चतुर्थ (बीसलदेव) ने करवाया था।

- बनास नदी अपने प्रवाह के अंत में सवाईमाधोपुर जिलें के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर जाकर चंबल में मिल जाती है।
- इसकी सहायक नदियां बेडच, कोठारी, खारी, मानसी, मोरेल आदि हैं

3. बेडच नदी –

उद्गम से इस नदी को आयड़ नदी के नाम से भी जानते है तथा उदय सागर झील के उपरांत इसे बेडच नदी के नाम से जानते है।

- इस नदी का उद्गम स्थल उदयपुर जिलें में स्थित गोगुंदा की पहाड़ियों से होता है उदयपुर में 13 किमी बहने के बाद यह नदी उदयसागर झील में गिरती है। उदयपुर, चित्तौड़गढ़ में बहती हुई यह नदी भीलवाड़ा में बीगोंद कस्बे के निकट बनास नदी में मिल जाती है । वही मेनाल नदी बीच में मिलती है इनके संगम स्थल को त्रिवेणी संगम कहते हैं।

4. गंभीरी नदी –

यह मध्यप्रदेश राज्य के रतलाम जिलें के जावरा की पहाड़ियों से निकलती है यह नदी चित्तौड़गढ़ जिलें में बेडच में जाकर विलीन हो जाती है, इसे चित्तौड़गढ़ की गंगा भी कहा जाता है।

5. खारी नदी -

इस नदी का उद्गम स्थल राजसमंद जिलें में स्थित बिजराल ग्राम की पहाड़ियों से होता है यह नदी अजमेर तथा उदयपुर की सीमा निर्धारित करती है यहां ओजियाना की सभ्यता विकसित हुई थी आगे चल कर यह नदी टोंक जिलें के राजमहल नामक स्थान पर बनास में जाकर मिल जाती है।

6. कोठारी नदी -

इस नदी का उद्गम राजसमंद जिलें के दिवेर नामक स्थान से होता है तथा भीलवाड़ा जिलें में बनास नदी में जाकर मिल जाती है इस नदी पर मेज बांध बनाया गया है।

7. मानसी नदी -

इस नदी का उद्गम भीलवाड़ा जिलें में करणगढ़ की पहाड़ियों से होता है यह नदी भीलवाड़ा जिलें में बनास में जाकर मिल जाती है।

8. बाण गंगा नदी -

इसका उद्गम जयपुर जिलें की बैराठ पहाड़ियों से होता है इसे अर्जुन की गंगा भी कहा जाता है इस नदी की कुल लंबाई 380 किलोमीटर है इस नदी पर जयपुर में जमवारामगढ़ बांध बना हुआ है। अंत में यह नदी आगरा के समीप फतेहाबाद नामक स्थान पर यमुना में जाकर मिल जाती है।

9. पार्वती :-

उद्गम :- मध्यप्रदेश में विंधाचल पर्वत के "सेहोर" नामक स्थान से निकलती है ।

राजस्थान में प्रवेश :- करयाहट के निकट बारां जिलें में ।

बहाव क्षेत्र:- बारां कोटा तथा सवाईमाधोपुर ।

10. कालीसिंध:-

उद्गम :- मध्यप्रदेश में देवास के निकट बागली की पहाड़ियों से निकलती है ।

राजस्थान में प्रवेश :- रायपुर के निकट झालावाड़ जिलें में ।

बहाव क्षेत्र :- झालावाड़ तथा कोटा एवं ।

सहायक नदियां :- आहू, परवन, निवाज (निमाज), उजाड़ ।

आहू :-उद्गम :- मध्यप्रदेश में सुसनेर के निकट से निकलती है।

राजस्थान में प्रवेश :- नंदपुर के निकट झालावाड़ जिलें में ।

बहाव क्षेत्र :- झालावाड़ तथा कोटा ।

विशेष :- कालीसिंध तथा आहू नदी के संगम पर राजस्थान का जलदुर्ग गागरोन दुर्ग बना हुआ है ।

2. अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

1. लूनी नदी -

● इस नदी का उद्गम स्थल अजमेर जिलें में स्थित नाग पहाड़ी है । पुष्कर से गोविंदगढ़ (अजमेर) तक इसे साक्री के नाम से जाना जाता है। अजमेर में इसे साबरमती, सागरमती, या सरस्वती कहा जाता है, आगे चल कर इसे लूनी नदी के नाम से जाना जाता है।

● इसकी सहायक नदियां सुकड़ी, जवाई, सगाई, लीलड़ी, जोजड़ी, मीठड़ी, सागी इत्यादि हैं।

2. माही नदी

● इस नदी को दक्षिण की गंगा, कांठल की गंगा बांगड़ की गंगा, आदिवासियों की गंगा, दक्षिण

अध्याय – 7

'कच्छवाहा' वंश

- कच्छवाहा' अपने आपको भगवान श्री राम के पुत्र कुश' की संतान मानते हैं।
- संस्थापक दुलहराय (तेजकरण), मूलतः ग्वालियर निवासी था। 1137 ई. में उसने बड़गुर्जरों को हराकर नवीन ढूँढाड़ राज्य की स्थापना की।
- दुलहराय के वंशज कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं से आमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया, जो 1727 ई. तक कच्छवाहा वंश की राजधानी रहा।
- इसी वंश के शेखा ने शेखावटी में अपना अलग राज्य बनाया।

कच्छवाहा वंश के प्रमुख शासक

पृथ्वीसिंह

- यह आमेर का पहला शक्तिशाली शासक था। 1527 में खानवा के युद्ध में पृथ्वीराज राणा साँगा की तरफ से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है, इस समय पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई अपने छोटे पुत्र पूरणमल का राज्याभिषेक करवाती है, जिसके कारण पृथ्वीराज का बड़ा पुत्र भीमसिंह नाराज हो जाता है।
- भीमदेव 1533 में पूरणमल को परास्त करके स्वयं शासक बनता है, 1536 में भीमदेव की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र रतन सिंह शासक बनता है, रतन सिंह से उसका चाचा साँगा शत्रुता रखने लग जाता है, साँगा ने बीकानेर के राव जैतसी के साथ मिलकर रतन सिंह से उसका मोजमाबाद वाला क्षेत्र छीनकर साँगानेर बसाता है, साँगा की मृत्यु के पश्चात उसका छोटा भाई भारमल रतन सिंह से शत्रुता रखने लग जाता है । भारमल ने रतन सिंह के छोटे भाई आसकरण को अपने पक्ष में मिलाते हुए आसकरण के माध्यम से रतन सिंह की हत्या करवा देता है और आसकरण को कुछ समय के लिए शासक बनाता है भारमल जून 1547 में आसकरण को हटाते हुए स्वयं शासक बन जाता है।
- रानी बालाबाई ने गलता में कृष्णदास पयहारी संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

भारमल (1547-1574 ई.)

- भारमल (1547-1574 ई.) या बिहारीमल 1547 ई. में भारमल आमेर का शासक बना।
- भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की व 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।
- मुग़ल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

भगवन्त दास (1574-1589 ई.)

- भगवन्त दास या भगवान दास भारमल का पुत्र था।
- उसने अपनी पुत्री मानबाई (मनभावनी) का विवाह शहजादे सलीम (जहाँगीर) से किया।
- मानबाई को सुल्तान निस्सा' की उपाधि प्राप्त थी। खुसरो इसी का पुत्र था।
- 1562 में जब भारमल अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तो अकबर भगवन्त दास को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त करता है।
- भगवन्त दास मुगलों के दरबार में नियुक्त होने वाला पहला राजपूत दरबारी था।
- अकबर ने भगवन्त दास को 1582 में लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया था। इसी लाहौर सूबेदारी के तहत 1589 में भगवन्त दास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह अकबर के पुत्र सलीम के साथ करवाया था।

मानसिंह (1589-1614 ई.)

- मानसिंह भगवन्त दास का पुत्र था।
- मानसिंह आमेर के कच्छवाहा शासकों में सर्वाधिक प्रतापी एवं महान् राजा था।
- मानसिंह ने 52 वर्ष तक मुगलों की सेवा की।
- मानसिंह 1573 में अकबर के दूत के रूप में राणा प्रताप से मिला था।
- 1576 ई. में हल्दीघाटी युद्ध में उसने शाही सेना का नेतृत्व किया था।
- अकबर ने उसे फर्जन्द (पुत्र) एवं राजा की उपाधि प्रदान की।
- वह अकबर के नवरत्नों में शामिल था।
- मानसिंह स्वयं कवि, विद्वान, साहित्य प्रेमी व विद्वानों का आश्रयदाता था।
- शिलादेवी (आमेर), जगत शिरोमणी (आमेर) गोविन्द देवजी (वृंदावन) मंदिर उसी ने बनवाये थे।

जयसिंह प्रथम या मिर्जा राजा जयसिंह (1621-1667)

- इसने तीन मुग़ल बादशाहों जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब को अपनी सेवाएँ दी।।

- उसने औरंगजेब की तरफ से शिवाजी को संधि के लिए बाध्य किया।
- यह संधि इतिहास में पुरन्दर की संधि (जून 1665 ई.) के नाम से प्रसिद्ध है। उसकी योग्यता एवं सेवाओं से प्रसन्न होकर शाहजहाँ ने उसे मिर्जा राजा की उपाधि प्रदान की।
- बिहारी सतसई के रचयिता कवि बिहारी उसके दरबारी कवि थे।
- बिहारी का भांजा कुलपति मिश्र भी बड़ा विद्वान था, जिसने 52 ग्रन्थों की रचना की इनका दरबारी था।
- इनकी मृत्यु बुरहानपुर के पास हुई थी।
- प्रमुख दरबारी: (i) बिहारी कवि - बिहारी सतसई - यह रचना पढ़कर ही जयसिंह पुनः आमेर आता है, इसमें कुल 713 दोहे हैं। जयसिंह ने बिहारी कवि को प्रत्येक दोहे के लिए एक स्वर्ण मुद्रा दान में दी थी।
- (ii) राम कवि- जयसिंह चरित्र
- **औरंगजेब व जयसिंह** :- शाहजहाँ के पुत्रों में जब उत्तराधिकार संघर्ष प्रारंभ हुआ था तब जयसिंह प्रथम (मिर्जा राजा जयसिंह) ने औरंगजेब का सहयोग किया था। औरंगजेब ने जनवरी 1665 में जयसिंह प्रथम को मराठों के दमन हेतु शिवाजी के विरुद्ध अभियान लेकर भेजा था इन अभियानों में जयसिंह प्रथम शिवाजी को 6 माह तक पुरंदर किले में घेरकर रखता है जिस पर शिवाजी मजबूर होकर 11 जून 1665 को पुरंदर की संधि करता है।
  1667 ई. में मराठों के विरुद्ध अभियान का संचालन करते हुए मिर्जा जयसिंह प्रथम बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) में मृत्यु को प्राप्त होता है।
- शाहजहाँ ने 1638 ई. में जयसिंह प्रथम को मिर्जा राजा की उपाधि प्रदान की थी।
- औरंगजेब जयसिंह प्रथम को बनवा के नाम से पुकारता था।

महाराजा रामसिंह प्रथम (1667 - 1689 ई.)

- मिर्जा राजा जयसिंह की मृत्यु के पश्चात् रामसिंह आमेर के शासक बने।
- औरंगजेब ने रामसिंह की निगरानी में शिवाजी को महल में कैद रखा था। लेकिन शिवाजी वहाँ से भाग निकले।
- 1669 ई. में औरंगजेब ने इन्हें आसाम विद्रोह का दमन करने के लिए भेजा।
- रामसिंह को विद्रोह का दमन करने के लिए काबुल भेजा गया जहाँ 1689 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।

महाराजा बिशनसिंह (1689-1700 ई.)

- रामसिंह के बाद इनका पौत्र बिशनसिंह (विष्णुसिंह) आमेर का शासक बना। क्योंकि इनके पुत्र किशनसिंह का दक्षिण में रहते हुए देहांत हो गया था।
- इन्होंने सिनसिनी के जाटों के विद्रोह का दमन किया तथा उसके बाद उन्हें मुल्तान भेजा गया जहाँ इन्होंने सक्खर का दुर्ग जीता।
- बिशनसिंह मुअज्म के साथ काबुल में पठानों के विद्रोह को दबाने के लिए गए जहाँ इनका देहांत हो गया था।

जयसिंह द्वितीय या सवाई जयसिंह (1700-1743 ई.)

- इनका वास्तविक नाम विजयसिंह था।
- बादशाह औरंगजेब ने उसकी वाकपटुता से प्रभावित होकर, उसकी तुलना जयसिंह प्रथम से की तथा उसे जयसिंह प्रथम से भी अधिक योग्य अर्थात् सवाया जानकर विजयसिंह का नाम बदलकर सवाई जयसिंह कर दिया।
- सवाई जयसिंह ने मुगलों के लिए तीन बार मराठों से युद्ध किये।
- सवाई जयसिंह द्वारा जाटों पर मुगलों की विजय होने के उपलक्ष्य में बादशाह मुहम्मद शाह ने जयसिंह को राज राजेश्वर, राजाधिराज, सवाई की उपाधि प्रदान की।
- सवाई जयसिंह ने मेवाड़ के महाराणा जगतसिंह द्वितीय से मिलकर 1734 ई. में हुरड़ा (भीलवाड़ा) राजस्थान के राजपूत राजाओं का सम्मेलन आयोजित किया। जिसका उद्देश्य सामुहिक शक्ति द्वारा मराठा आक्रमण को रोकना था।
- वह संस्कृत, फारसी, गणित एवं ज्योतिष का प्रकाण्ड विद्वान था उसे ज्योतिष शासक' भी कहा गया है।
- उसने जयसिंह कारिका' नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की।
- उसने जयपुर, दिल्ली, बनारस, उज्जैन व मथुरा में वेधशालाएँ बनवायी जिसमें सबसे बड़ी वेधशाला (जंतर-मंतर) जयपुर की है तथा सर्वप्रथम वेधशाला दिल्ली की है।
- उसने 18 नवम्बर, 1727 ई. में जयपुर नगर की स्थापना की। जयपुर का प्रधान वास्तुकार बंगाली ब्राह्मण विद्याधर भट्टाचार्य था।

अध्याय - 10

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां

क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।

क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रैल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुग़ल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
  - सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ौसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
  - इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
  - शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
  - जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
  - भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
  - 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
  - रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
  - 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
  - वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
  - वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
  - लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
  - 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
  - इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।
  - कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
  - भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।
  - अगस्त 1803 ई. में आंग्ल-मराठा के द्वितीय युद्ध में मराठों की पराजय के पश्चात मराठा पेशवा दौलतराव द्वारा 30 दिसम्बर, 1803 को अंग्रेजों के साथ सुर्जीअर्जन गाँव संधि कर जयपुर एवं जोधपुर राज्यों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
  - राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
  - आपसी अविश्वास के कारण यह संधि क्रियान्वित न हो पायी। इससे रुष्ट होकर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 5 बार भयंकर आक्रमण किये लेकिन अंग्रेज भरतपुर को जीतने में असफल रहे एवं अप्रैल 1805 में नई संधि हुई जिसमें भरतपुर की पूर्व की स्थिति रखी गई, भरतपुर राज्य की सीमा एवं क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन नहीं किया गया तथा भरतपुर को डीग क्षेत्र लौटा दिया गया।

अध्याय – 11
राजस्थान में 1857 की क्रांति

1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत -

- डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था ।
- डॉ. रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी ।
- डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था ।
- वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस) ।
- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था ।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत है ।)
- जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था ।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्ल्यू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है ।
- क्रांति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)
- देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ ।
- चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड) ।
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी ।
- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था । इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है ।
- कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है । परिणाम स्वरूप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था ।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था ।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची ।

  इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट

1. कोटा रियासत में - मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में - मेक मैसन
3. भरतपुर रियासत में - मोरिशन
4. जयपुर रियासत में – कर्नल ईडन
5. उदयपुर रियासत में - शावर्स और
6. सिरोही रियासत में - जे.डी.हॉल थे

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक

कोटा रियासत में - रामसिंह
- जोधपुर रियासत में - तख्तसिंह
- भरतपुर रियासत में - जसवंत सिंह
- उदयपुर रियासत में - स्वरूप सिंह
- जयपुर रियासत में - रामसिंह द्वितीय
- सिरोही रियासत में - शिव सिंह
- धौलपुर रियासत में - भगवंत सिंह
- बीकानेर रियासत में - सरदार सिंह
- करौली रियासत में - मदनपाल
- टोंक रियासत में - नवाब वजीरुद्दौला
- बूँदी रियासत में - रामसिंह
- अलवर रियासत में - विनयसिंह
- जैसलमेर रियासत में – रणजीत सिंह
- झालावाड रियासत में – पृथ्वीसिंह
- प्रतापगढ़ रियासत में – दलपत सिंह
- बाँसवाड़ा रियासत में - लक्ष्मण सिंह और
- डूंगरपुर रियासत में - उदयसिंह थे ।

राजस्थान में क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियां थी जिनमें से खेरवाड़ा (उदयपुर) और ब्यावर (अजमेर) सैनिकों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था ।

सैनिक छावनियां (Military Encampment)

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्य प्रदेश)
3. एरिनपुरा (पाली)
4. देवली (टोंक)
5. ब्यावर (अजमेर)
6. खेरवाड़ा (उदयपुर)

NOTE – खैरवाड़ा व ब्यावर सैनिक छावनीयों ने इस सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ

- 1857 Revolution के समय भारत का गवर्नर जनरल " लॉर्ड केनिंग " था ।
- जब AGG जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रांति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रांति की सूचना 19 मई 1857 को मिली ।
- जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैगजीन दुर्ग में अंग्रेजों का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओं को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक संधियों का स्मरण कराया तथा क्रांति के दमन हेतु सहयोग माँगा ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।
- उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

नसीराबाद में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिकों ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों में असन्तोष व्याप्त हो गया था । इसके अतिरिक्त सरकार ने चर्बी वाले कारतूसों का विरोध होने के कारण इसके प्रयोग को बंद करने के आदेश दिए जिससे सैनिकों का संदेह और भी दृढ हो गया ।
- 30 वीं नेटिव इन्फेंट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- 28 मई 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इन्कार कर दिया।
- विद्रोही सैनिकों ने छावनी में मौजूद अंग्रेजों के मेजर स्पोटिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।
- बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का नेतृत्व किया गया।
- लेफ्टिनेंट माल्टर, व लेफ्टिनेंट हेथकोट के नेतृत्व में मेवाड़ के सैनिकों ने विद्रोहियों का पीछा किया लेकिन असफल रहे।

नीमच में क्रांति

- 2 जून 1857 को नीमच में कर्नल एबॉट ने हिन्दू व मुस्लिम सैनिकों को अंग्रेजों के प्रति वफादारी के लिए गीता व कुरान की शपथ दिलाई।
- अवध के एक सैनिक मोहम्मद अली बेग ने इसका विरोध किया ओर कर्नल एबॉट की हत्या कर दी।
- 3 जून 1857 को नीमच छावनी में क्रांति भड़क गई । यहाँ हीरालाल द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
- यहाँ मौजूद 40 अंग्रेजों ने भागकर डूंगला गाँव में रुंगाराम किसान के यहाँ शरण ली।
- मेवाड़ के सैनिक इन्हें उदयपुर ले गये जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमंदिर पैलेस में ठहराया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ देने वाला राजपूताने का पहला शासक मेवाड़ का स्वरूप सिंह था।
- नीमच के विद्रोही सैनिकों ने आगरा पहुँचकर वहाँ जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया। विद्रोहियों ने आगरा के सरकारी खजाने से एक लाख छब्बीस हजार रुपये लूट लिये।
- नीमच के सैनिकों ने देवली छावनी होते हुए दिल्ली कूच किया।
- शाहपुरा के शासक लक्ष्मण सिंह ने नीमच के विद्रोही सैनिकों को सहायता व शरण दी।

36.	श्री रामेश्वर ठाकुर (कार्यवाहक)	10 जुलाई, 2009 – 22 जुलाई, 2009
37.	श्री शिलेन्द्र कुमार सिंह	23 जुलाई, 2009 – 24 जनवरी, 2010
38.	श्री मती प्रभाराव (कार्यवाहक)	03 दिसम्बर, 2009 – 24 जनवरी, 2010
39.	श्रीमती प्रभाराव	25 जनवरी, 2010 – 26 अप्रैल, 2010
40.	श्री शिवराज पाटिल (कार्यवाहक)	28 अप्रैल, 2010 – 11 मई, 2012
41.	श्रीमती मार्पोट आलवा	12 मई, 2012 – 7 अगस्त, 2014
42.	श्री रामनाईक (कार्यवाहक)	8 अगस्त, 2014 – 3 सितम्बर, 2014
43.	श्री कल्याणसिंह	8 सितम्बर, 2014- 8 सितम्बर, 2019
44.	श्री कलराज मिश्र	9 सितम्बर, 2019 से लगातार ....

अध्याय – 2

मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्

- मुख्यमंत्री किसी राज्य की कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है । वह राज्य विधानसभा का नेता होता है । राज्य की सर्वोच्च कार्यपालिका शक्ति मुख्यमंत्री के हाथों में है । वह राज्य का वास्तविक शासक/तथ्यत प्रमुख / डी-फैक्टों हेड होता है ।
- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल के द्वारा संविधान के **अनुच्छेद 164 (1)** के तहत् की जाती है ।
- सामान्यत , राज्यपाल बहुमत प्राप्त दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है । लेकिन यदि चुनावों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है , उस स्थिति में राज्यपाल स्वविवेक से मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। उसे एक माह के भीतर सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कहता है ।

राज्यपाल स्वविवेक द्वारा मुख्यमंत्री की नियुक्ति ऐसे समय पर करता है जब कार्यकाल के दौरान किसी मुख्यमंत्री की मृत्यु हो जाए और कोई उत्तराधिकारी तय नहीं हो या चुनावों में किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ हो ।

NOTE- केन्द्र शासित प्रदेशों में (जहाँ विधानसभा है) मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति , राष्ट्रपति करता है । वर्तमान में भारत के तीन केन्द्र शासित प्रदेशों क्रमशः पुदुच्चेरी, दिल्ली और जम्मू- कश्मीर में विधानसभाओं का प्रावधान है ।

- **अनुच्छेद 164 (3)** मुख्यमंत्री व मंत्रियों को शपथ राज्यपाल दिलाता है । राज्य का मुख्यमंत्री कार्यग्रहण से पूर्व राज्यपाल के समक्ष पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण करता है। मुख्यमंत्री व मंत्रियों की शपथ का प्रारूप **भारतीय संविधान की अनुसूची 3** में मिलता है ।

अनुच्छेद 164 (4) मुख्यमंत्री एवं मंत्रियों की योग्यता भारतीय संविधान में मुख्यमंत्री पद के लिए योग्यताएँ आवश्यक है जो एक मंत्री पद के लिए होती है । जैसे– (I) न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो । (2) राज्य विधानमण्डल के दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य हो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानमण्डल के किसी भी सदन का सदस्य न भी हो तो 6 माह तक मुख्यमंत्री रह सकता है । 6 माह के भीतर उसे विधानमण्डल के किसी एक सदन की सदस्यता ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा त्यागपत्र देना पड़ता है । मुख्यमंत्री सामान्यतः विधानमण्डल के निम्न सदन (विधान सभा) का सदस्य होता है, लेकिन उच्च सदन (विधान परिषद्) के सदस्य को भी मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है यदि उस राज्य में द्विसदनात्मक विधान मण्डल है तो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानपरिषद् का सदस्य है तो वह

(i) राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं ले सकता।

(ii) वह अविश्वास प्रस्ताव पर वोट नहीं कर सकता है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव विधानसभा में लाया जाता है ।

- ***अनुच्छेद 164 (5)*** मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों व कार्यकाल

  मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों का निर्धारण राज्य विधानमण्डल द्वारा किया जाता है । वर्तमान में राजस्थान के मुख्यमंत्री को 75,000 रु प्रतिमाह वेतन मिलता है । (1 अप्रेल , 2019 के बाद) स्मरणीय तथ्य : मुख्यमंत्री का कार्यकाल 5 वर्ष होता है , परन्तु वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत अपने पद पर बना रहता है । अर्थात् जब तक कि उसका विधानसभा में बहुमत है । लेकिन यदि मुख्यमंत्री विधानसभा में अपना बहुमत खो देता है तो उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए अन्यथा राज्यपाल उसे बर्खास्त कर सकता है । मुख्यमंत्री अपना त्यागपत्र राज्यपाल को देता है । और मुख्यमंत्री का त्यागपत्र समस्त मंत्रिपरिषद् का त्यागपत्र माना जाता है ।

अनुच्छेद 164 (2) - राज्य की मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है ।

मुख्यमंत्री के कार्य एवं शक्तियाँ

मंत्रिपरिषद् के संबंध में

- मुख्यमंत्री की सलाह से राज्यपाल द्वारा मंत्रियों की नियुक्ति की जाती है ।
- मुख्यमंत्री , मंत्रियों के मध्य विभागों का बंटवारा करता है और उनमें फेरबदल भी करता है । मतभेद होने पर वह किसी भी मंत्री को त्यागपत्र देने के लिए कह सकता है या राज्यपाल को उसे बर्खास्त करने का परामर्श दे सकता है ।
- मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद् एवं मंत्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता करता है ।

NOTE- मुख्यमंत्री की अनुपस्थिति में सबसे वरिष्ठ मंत्री मंत्रिमण्डल की अध्यक्षता करता है।

- वह सभी मंत्रियों को उनके कार्यों में परामर्श देता है तथा उनके कार्यों पर नियंत्रण भी रखता है ।
- मुख्यमंत्री , राज्यपाल और मंत्रिपरिषद् के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करता है ।

अनुच्छेद 164 (1) क - इस अनुच्छेद को 91 वें संविधान संशोधन 2003 द्वारा जोड़ा गया । इसमें राज्य मंत्रिपरिषद् का आकार निश्चित किया गया। राज्य मंत्रिपरिषद् में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम मंत्री उस राज्य की कुल विधानसभा सीटों का 15 % तथा मुख्यमंत्री सहित न्यूनतम मंत्री 12 होंगे ।

<u>राज्यपाल के संदर्भ में</u>

अनुच्छेद 167- इसमें मुख्यमंत्री के संवैधानिक कर्त्तव्यों का उल्लेख मिलता है ।

(i) वह मंत्रिपरिषद् द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों के लिए सभी निर्णयों तथा विधायन के प्रस्तावों के बारे में राज्यपाल को सूचित करें।

(ii) राज्यपाल द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों अथवा विधायन प्रस्तावों के बारे में माँगे जाने पर सूचना प्रदान करना।

(iii) यदि राज्यपाल चाहे तो मंत्रिपरिषद् के समक्ष किसी ऐसे मामले को विचारार्थ रखे जिस पर निर्णय तो किसी मंत्री द्वारा लिया जाना है लेकिन जिस पर मंत्रिपरिषद् विचार नहीं किया है ।

NOTE- राज्य की प्रमुख संवैधानिक संस्था जैसे:- राज्य के महाधिवक्ता (अनुच्छेद-165), राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद 243 I- पंचायतीराज, अनुच्छेद 243 Y- नगर निकायों के लिए) तथा राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद-316) राज्य निर्वाचन आयुक्त (अनुच्छेद 243 K-पंचायतीराज व अनुच्छेद 243 ZA- नगर निकायों के लिए) की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा मंत्रिपरिषद की सलाह (विशेषतया मुख्यमंत्री) की जाती है।

- वसुंधरा राजे राजस्थान विधानसभा में विपक्ष की नेता भी रही है।

NOTE- राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :- (1) भैरोंसिंह शेखावत (तीन बार) (2) हरिदेव जोशी (एक बार) (3) वसुंधरा राजे (एक बार)

राजस्थान के मुख्यमंत्री

क्र.	मुख्यमंत्री	कार्यकाल
1.	श्री हीरालाल शास्त्री	07.04.1949 - 05.01.1951
2.	श्री सी.एस. वैंकटाचार्य	06.01.1951 - 25.04.1951
3.	श्री जयनारायण व्यास	26.04.1951 - 03.03.1952
4.	श्री टीकाराम पालीवाल	03.03.1952 - 31.10.1952
5.	श्री जयनारायणव्यास	01.11.1952 - 12.11.1954
6.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	13.11.1954 - 11.04.1957
7.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	11.04.1957 - 11.03.1962
8.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	12.03.1962 - 13.03.1967
9.	राष्ट्रपति शासन	13.03.1967- 26.04.1967
10.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	26.04.1967- 09.07.1971
11.	श्री बरकतुल्लाखां	09.07.1971- 11.10.1973
12.	श्री हरि देव जोशी	11.10.1973 - 29.04.1977
13.	राष्ट्रपति शासन	30.04.1977- 21.06.1977
14.	श्री भैरोंसिंह शेखावत	22.06.1977 - 16.02.1980
15.	राष्ट्रपति शासन	17.02.1980 - 05.06.1980
16.	श्री जगन्नाथ पहाडिया	06.06.1980- 13.07.1981
17.	श्री शिवचरण माथुर	14.07.1981- 23.02.1985
18.	श्री हीरालाल देवपुरा	23.02.1985 - 10.03.1985
19.	श्री हरि देव जोशी	10.03.1985 - 20.01.1988
20.	श्री शिव चरण माथुर	20.01.1988- 04.12.1989
21.	श्री हरि देव जोशी	04.12.1989- 04.03.1990
22.	श्री भैरों सिंह शेखावत	04.03.1990 - 15.12.1992
23.	राष्ट्रपति शासन	15.12.1992 - 03.12.1993
24.	श्री भैरोंसिंह शेखावत	04.12.1993 - 01.12.1998
25.	श्री अशोक गहलोत	01.12.1998 - 08.12.2003
26.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	08.12.2003- 13.12.2008
27.	श्री अशोक गहलोत	13.12.2008 - 13.12.2013
28.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	13.12.2013 - 17.12.2018

29.	श्री अशोक गहलोत	17.12.2018 से लगातार...

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री- **हीरालाल शास्त्री**
- राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के प्रथम उपमुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- एकमात्र व्यक्ति जो राजस्थान के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री दोनों पदों पर रहे- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो कि मनोनीत व निर्वाचित हुए- **जयनारायण व्यास**
- राजस्थान में सर्वाधिक कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान में न्यूनतम कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **हीरालाल देवपुरा**
- राजस्थान के सबसे युवा मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री जिनकी पद पर रहते हुए मृत्यु हुई- **बरकतुल्ला खां**
- राजस्थान के प्रथम मुस्लिम (अल्पसंख्यक) मुख्यमंत्री- **बरकतुल्ला खां**
- राजस्थान के प्रथम दलित मुख्यमंत्री (अनुसूचित जाति के)- **जगन्नाथ पहाडिया**
- राजस्थान के एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री जो उपराष्ट्रपति भी बने – **भैंरोसिंह शेखावत**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो विधानसभा अध्यक्ष भी रहे- **हीरालाल देवपुरा**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो राज्य वित्त आयोग (दूसरा) के अध्यक्ष भी बने- **हीरालाल देवपुरा**

एक से अधिक बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने वाले व्यक्ति-

(A) श्री मोहनलाल सुखाड़िया (4 बार)
(B) श्री भैंरोसिंह शेखावत (3 बार)
(C) श्री हरिदेव जोशी (3 बार)
(D) श्री अशोक गहलोत (3 बार)
(E) श्रीमती वसुंधरा राजे (2 बार)
(F) श्री शिवचरण माथुर (2 बार)
(G) श्री जयनारायण व्यास (1 बार मनोनीति, 1 बार निर्वाचित)

राजस्थान के ऐसे मुख्यमंत्री जो राज्यपाल भी रहे :-

(A) मोहनलाल सुखाड़िया- कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु के राज्यपाल रहे ।
(B) हरिदेव जोशी- असम , मेघालय, पं . बंगाल के राज्यपाल रहे ।
(C) शिवचरण माथुर- असम के राज्यपाल रहे ।
(D) जगन्नाथ पहाड़िया- बिहार, हरियाणा के राज्यपाल रहे ।

राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :-

(A) भैंरोसिंह शेखावत (तीन बार)
(B) हरिदेव जोशी (एक बार)
(C) वसुंधरा राजे (एक बार)

राज्य मंत्रिपरिषद्

अनुच्छेद 163 के अनुसार राज्यपाल को सलाह एवं सहायता देने के लिए एक मंत्रिपरिषद् होगी जिसका प्रमुख मुख्यमंत्री होता है । राज्यपाल अपने स्वविवेक शक्तियों के अलावा सभी कृत्यों का प्रयोग मंत्रिपरिषद् की सलाह पर करता है ।

NOTE – राज्यपाल को मंत्रिपरिषद् का परामर्श मानना अनिवार्य है । परामर्श को एक बार भी पुनः विचार हेतु नहीं भेज सकता ।

NOTE – मंत्रिपरिषद् ने राज्यपाल को क्या सलाह दी इसकी न्यायालय में जाँच नहीं की जा सकती ।

अनुच्छेद 164 मंत्रियों से संबंधित प्रावधान

मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है तथा अन्य मंत्रियों की नियुक्ति मुख्यमंत्री की सलाह पर राज्यपाल ही करता है ।

91 वें संविधान संशोधन (2003) के तहत् राज्यों में मुख्यमंत्री सहित मंत्रियों की अधिकतम संख्या विधानसभा की कुल संख्या के 15 % से अधिक नहीं होगी लेकिन न्यूनतम संख्या मुख्यमंत्री समेत 12 से कम नहीं होनी चाहिए ।

अनुच्छेद 164 के अनुसार मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं ओडिशा राज्यों में एक जनजातिय मंत्री की नियुक्ति करना अनिवार्य है । यह जनजातिय मंत्री अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्गों के कल्याण से संबंधित कार्य करता है ।

अपीलीय शक्तियाँ

- अधिनियम की धारा 19(1) के अंतर्गत प्रथम अपील प्राधिकारी के द्वारा दिये गये निर्णय के विरुद्ध द्वितीय अपील सुनने का अधिकार धारा 19(3) के अंतर्गत राजस्थान राज्य सूचना आयोग को प्राप्त है।
- राजस्थान राज्य सूचना आयोग के समक्ष प्रथम अपील 90 दिवस के भीतर की जा सकती है।
- इस अवधि के गुजरने के बाद भी यदि सूचना आयोग अपीलार्थी के द्वारा बताये गये विलम्ब के कारण से संतुष्ट है तो अपील सुनवाई हेतु दर्ज की जा सकती है।

जुर्माना लगाने की शक्तियां

- सूचना आयोग को जुर्माना लगाने की शक्तियाँ प्राप्त हैं।
- यदि लोक सूचना अधिकारी ने बिना समुचित कारण

(क) सूचना आवेदन लेने से मना कर दिया है, या

(ख) निर्धारित समयावधि में सूचना उपलब्ध नहीं कराई है, या

(ग) सूचना आवेदन को असद्भावनापूर्वक अस्वीकार कर दिया है, या

(घ) जान-बूझकर अशुद्ध, अधूरीया भ्रामक सूचना उपलब्ध कराई है, या

(ङ) सूचना आवेदन की विषय-वस्तु को नष्ट कर दिया है, या

(च) सूचना उपलब्ध कराने में किसी प्रकार की बाधा डाली है,

- तो वह उस पर आवेदन प्राप्ति से सूचना उपलब्ध कराने तक 250 रुपये प्रतिदिन की दर से जुर्माना लगा सकता है जो अधिकतम 25000 रुपये हो सकती है।
- जुर्माना लगाने से पहले आयोग राज्य लोकसूचना अधिकारी को सुनवाई का समुचित अवसर प्रदान करेगा ।

राजस्थान विविध

राजस्थान में प्रथम

➢	प्रथम पुलिस महानिदेशक	रघुनाथ सिंह कपूर (1983 से)
➢	प्रथम राजप्रमुख	सवाई मानसिंह (जयपुर)
➢	प्रथम राज्यपाल	सरदार गुरुमुख निहाल सिंह
➢	प्रथम मुख्यमंत्री	पण्डित हीरा लाल शास्त्री
➢	प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री	टीकाराम पालीवाल
➢	प्रथम विधानसभा अध्यक्ष	नर्रोत्तम लाल जोशी
➢	प्रथम विधानसभा उपाध्यक्ष	लाल सिंह शक्तावत
➢	प्रथम राज्यपाल में मनोनीत होने वाले राजस्थानी	नारायण सिंह माणकलाव
➢	प्रथम मुख्य न्यायधीश	कमलकांत वर्मा
➢	प्रथम राज्य मानवाधिकार आयोग के अधक्ष	कांता भटनागर
➢	प्रथम राज्य लोकसेवा आयोग अध्यक्ष	एस. के. घोष
➢	प्रथम मुख्य सचिव	के. राधाकृष्णन

➢	प्रथम राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष	कृष्ण कुमार गोयल	➢	प्रथम महिला मुख्य सचिव	श्रीमती कुशाल सिंह
➢	प्रथम पुलिस महानिरीक्षक	आर. बनर्जी (1949 से)	➢	प्रथम पद्म विभूषण	श्रीमती जानकी देवी बजाज (1956)
➢	प्रथम महाराज प्रमुख	महाराणा भूपालसिंह (उदयपुर)	➢	प्रथम महिला डॉक्टर	डॉ. पार्वती गहलोत (जोधपुर)
➢	प्रथम सुचना आयुक्त	एम. डी कोरानी	➢	प्रथम पद्म श्री	श्रीमती रत्ना शास्त्री
➢	प्रथम महिला राज्यपाल	प्रतिभा पाटिल	➢	प्रथम महिला मेग्सेसे पुरुस्कार	अरुणा राय (2000)
➢	प्रथम महिला मुख्यमंत्री	वसुंधरा राजे सिंधिया	➢	प्रथम पद्म् विभूषण	कंवर सेन (1956)
			➢	प्रथम राजीव गाँधी खेल रत्न पुरुस्कार	राज्यवर्धन सिंह राठोड (2004-2005)
➢	प्रथम महिला विधानसभा अध्यक्ष	सुमित्रा सिंह	➢	प्रथम परमवीर चक्र	हवालदार मेजर पीरु सिंह (1948)
➢	प्रथम महिला विधानसभा उपाध्यक्ष	तारा भंडारी	➢	प्रथम अशोक चक्र	हवालदार शम्भूदयाल सिंह (1961)
➢	प्रथम महिला उपमुख्यमंत्री	कमला बेनीवाल	➢	प्रथम महावीर चक्र	कर्नल किशन सिंह राठोड (1948)
➢	प्रथम महिला मंत्री	कमला बेनीवाल	➢	प्रथम ग्रेमी अवार्ड	पण्डित विश्व मोहन भट्ट (1994)
➢	प्रथम महिला विधायक	यशोदा देवी (बांसवाडा)	➢	प्रथम मेग्सेसे पुरुस्कार	डॉ. प्रमोद करण सेट्ठी (1981)
➢	प्रथम महिला सांसद	महारानी गायत्री देवी (जयपुर)	➢	प्रथम राजस्थान खेल रत्न पुरुस्कार	लिम्बाराम (1995)
➢	प्रथम महिला पायलेट	नम्रता भट्ट	➢	प्रथम अर्जुन पुरुस्कार	डॉ. करणी सिंह (निशानेबाजी, 1961), प्रेम सिंह (पोलो
➢	प्रथम महिला फ्लाइंग ऑफिसर	निवेदित्ता			

		1961), सलीम दुरानी (क्रिकेट 1961)
➢	प्रथम अर्जुन पुरुस्कार	डॉ. करणी सिंह (निशानेबाजी, 1961), प्रेम सिंह (पोलो 1961), सलीम दुरानी (क्रिकेट 1961)
➢	प्रथम राजस्थानी अभिनेता	महिपाल (नजराना)
➢		
➢	प्रथम राजस्थानी अभिनेत्री	सुनेना (नजराना)
➢	प्रथम निर्माता निदेशक व संगीतकार	जी.पी. कपूर

राजस्थान में बड़ा, ऊँचा, लम्बा, छोटा, सर्वाधिक व न्यूनतम

➢	सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला जिला	जैसलमेर 38,401 वर्ग किलोमीटर
➢	न्यूनतम क्षेत्रफल वाला जिला	धौलपुर 3032 वर्ग किलोमीटर
➢	सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला	जयपुर
➢	न्यूनतम जनसंख्या वाला नगर	जैसलमेर
➢	सर्वाधिक जनसंख्या वाला नगर	जयपुर
➢	सबसे छोटा नगर	बोरखेडा (बांसवाडा)
➢	सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला जिला	जयपुर 595 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर
➢	न्यूनतम जनसंख्या घनत्व वाला जिला	जैसलमेर 17 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर
➢	सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला	डूंगरपुर ९९५
➢	न्यूनतम लिंगानुपात वाला जिला	धौलपुर 846
➢	सर्वाधिक वृद्धि दर वाला जिला	बाडमेर 32.5 प्रतिशत
➢	न्यूनतम वृद्धि दर वाला जिला	श्री गंगानगर 10 प्रतिशत
➢	सर्वाधिक साक्षरता प्रतिशत वाला जिला	कोटा 76.6 प्रतिशत
➢	सम्पूर्ण साक्षरता गाँव	मसुदा (अजमेर)

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय-1

श्रृंखला
Series

वर्णानुक्रम श्रृंखला (Albhabetical Series):- alphabetical series से अंग्रेजी के वर्णमाला की position पर आधारित अलग -अलग तरीके से प्रश्न पूछें जाते हैं।

यहाँ हम सभी तरीकों को जानेगें जो एग्जाम में अक्सर पूछें जाते हैं।

TYPE 1 :- इस प्रकार के प्रश्नों में अंग्रेजी वर्णमाला की position दिए गए नम्बर के अनुसार ज्ञात करनी होती है इसके लिए प्रत्येक अक्षर के नम्बर पता होने चाहिए जिससे इस टाइप के प्रश्नों को हल करने में दिक्कत न आये।

स्थान (POSITION):-

सीधी श्रृंखला :-

बाएँ से दाएँ →

A B C D E F G H I J K L M
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
N O P Q R S T U V W X Y Z
14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26

← दाएँ से बाएँ

अक्षर की बाईं ओर से गणना करने के लिए अक्षर A से तथा दाईं ओर से गणना करने के लिए अक्षर Z से गिनना प्रारम्भ करते हैं।

इन वर्ण की संख्या को याद रखने के लिए आप याद रख सकते हैं EJOTY को

E J O T Y

5 → 10 → 15 → 20 → 25

किसी वर्ण की विपरीत संख्या ज्ञात करने के लिए 27 में से उसकी मूल संख्या को घटाना होगा।

जैसे : E = 27 - 5 = 22

E की मूल संख्या 5 होती है इसकी विपरीत संख्या 22 होगी।

अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ व दाएँ का निर्धारण करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- इसमें यह मान लिया जाता है कि सभी अक्षर हमारे जैसे सामने की ओर देख रहे हैं।
- इसमें अंग्रेजी वर्णमाला निम्नलिखित क्रम में हो सकती है।

(i) Usual (A-Z)
(ii) Reverse (Z-A)
(iii) 1st half Reverse (M-A, N-Z)
(iv) 2nd half Reverse (A-M, Z-N)
(v) Both half Reverse (M-A, Z-N)
(vi) Middle term
(vii) Mixed Series
(viii) Variable

A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

← बाईं ओर → दाईं ओर

- **ठीक बाएँ** का अर्थ होता है उस अक्षर के तुरंत पहले का अक्षर **जैसे :-**
  K के ठीक बाएँ का अक्षर = J
- **ठीक दाएँ** का अर्थ होता है उस अक्षर के तुरंत बाद का अक्षर **जैसे :-**
  P के ठीक दाएँ का अक्षर = Q
- **आपके दाएँ से** का अर्थ है आपके दाएँ से बाईं ओर मतलब Z से A की ओर
  A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z ←
- **आपके बाएँ से** का अर्थ है आपके बाएँ से दाएँ ओर मतलब A से Z की ओर
  A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z →

- **बाईं ओर** का अर्थ है, दाएँ से बाएँ ओर मतलब अक्षर Z से A की ओर **जैसे :**
  Z Y X ....D C B A
- **दाईं ओर** का अर्थ होता है, बाएँ से दाएँ ओर मतलब अक्षर A से Z की ओर **जैसे :-**
  A B C ....X Y Z

  Note: दाएँ = Right = R
  बाएँ = Left = L
  दाएँ से 8 = R_8
  बाएँ से 12 = L_{12}
- यदि प्रश्न में दोनों शब्द बाएँ से बाएँ या दाएँ से दाएँ होगा तो उत्तर ज्ञात करने के लिए हमेशा घटाएंगे **जैसे :**

  Ex1- अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 20 वें अक्षर के बाएँ 10 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?
  बाएँ से - 20 वाँ
  बाएँ से - 10 वाँ
  बाएँ से - 20 -10 = 10 वाँ
  बाएँ से 10 वाँ अक्षर = j

  Ex2- अंग्रेजी वर्णमाला में दाएँ से 20 वें अक्षर के दाएँ 10 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?
  दाएँ से (20 -10) वाँ अक्षर = दाएँ से 10 वाँ =
  बाएँ से (27-10) = बाएँ से 17 वाँ = Q
- अगर आपको पता है की दाएँ से 17 वाँ Q होता है तो आप सीधे उत्तर Q दे सकते हैं लेकिन अगर आपको नहीं पता है तो आप विपरीत अक्षर निकालने के लिए 27 में से उस अक्षर की संख्या को घटा कर दाएँ से 17 वाँ अक्षर निकाल सकते हैं ।
- यदि प्रश्न में पहला शब्द दाएँ हो तो जोड़ने या घटाने के बाद प्राप्त उत्तर को हमेशा 27 से घटाएंगे ।
- यदि अंग्रेजी वर्णमाला को विपरीत क्रम में लिख दिया जाए तो नियम भी विपरीत हो जायेगा मतलब जो 27 में से घटाने वाली क्रिया प्रथम शब्द बाएँ आने पर की जाएगी
- यदि प्रश्न में दोनों शब्द बाएँ से दाएँ या दाएँ से बाएँ होंगे तो उत्तर ज्ञात करने के लिए हमेशा जोड़ेंगे जैसे :-

  Ex- अंग्रेजी वर्णमाला में दाईं ओर से 15वें अक्षर के बाएँ ओर 5 वाँ अक्षर कौन-सा होगा?
  दाएँ से = 15 वाँ
  बाएँ से = 5 वाँ
  दाएँ से = 15 + 5 = 20 वाँ
  बाएँ से = 27 - 20 = 7 वाँ = G

Ex- अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 25 वें अक्षर के बाएँ 22 वें अक्षर के दाहिने 8 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?

Solutionstion: $L_{25} - L_{22} - R_8$
$L_3 - R_8$
L_{11} = K Ans.

Ex- अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 16 वें अक्षर के दाहिनें आठवें अक्षर के बाएँ 22 वाँ अक्षर कौन-सा होगा?

Solutions. $L_{16} - R_8 - L_{22}$
$L_{24} - R_{22} = L_2$ = B **Ans.**

> **Note: -**
> यदि मान Positive (26+) में आये तो 26 घटाकर Answer करते हैं।
> यदि Value negative में आये तो 26 जोड़कर Answer करते हैं।

Ex - अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 10 वें अक्षर के बाएँ 5 वें अक्षर के बाएँ 9 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?

Solutions. $L_{10} - L_5 - L_9$
$L_5 - L_9$
$L_{(-4)} = L_{22}$ = V **Ans.**

> **Note:**
> Position from left end = 27- Position from Right end

Ex - अंग्रेजी वर्णमाला में दाहिने से 22 वें अक्षर के दाहिने 17 वें अक्षर के बाएँ 18 वाँ अक्षर कौन सा होगा ?

Solutionstion: $R_{22} - R_{17} - L_{18}$
$\Rightarrow R_5 - L_{18}$
$\Rightarrow R_{23}$ (27 घटा देते हैं)
L_4 = D Ans.

Note: दाएँ = Right = R
बाएँ = Left = L
दाएँ से 8 = R_8
बाएँ से 12 = L_{12}

Ans विकल्प (a)और (d) नहीं हो सकते क्योंकि दिए गए शब्द में E नहीं है ।

विकल्प (b) भी नहीं हो सकता क्योंकि दिए गए शब्द में A दो बार नहीं है ।

इसका सही उत्तर (C) SOUL होगा क्योंकि इसका प्रत्येक अक्षर दिए गए शब्द में है ।

Ex2- शब्द 'REASONING' के अक्षरों से कौन-सा शब्द नहीं बनेगा ?

(a)NOSE (b)RISING (C)REASON (d)NEAR

Ans(b) केवल विकल्प (b) RISING को छोड़ कर बाकि सभी शब्द के अक्षर दिए गए शब्द में आते हैं ।

Type3 :- इसमें प्रश्न single alphabets अवस्था में होते हैं **जैसे** :-

जोड़ना :- इसमें कोई निश्चित अंक जोड़कर series का अगला अक्षर ज्ञात करते हैं इसको जल्दी हल करने के लिए आपको हर अक्षर का नम्बर पता होना चाहिए ।

Ex.1- निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा ?

A ,E ,I ,M ,Q ,?

Ans: A , E , I , M , Q , ?

1 5 9 13 17

1 + 4 = 5

5 + 4 = 9

9 + 4 = 13

13 + 4 = 17

17 + 4 = 21 = U

इसमें हर अक्षर में 4 जोड़ा जा रहा है इसलिए अगला अक्षर U होगा ।

Ex – निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?)के स्थान पर क्या आएगा ?

A, D, H, M ? Z

(A) B (B) G
(C) S (D) N

हल- (C)

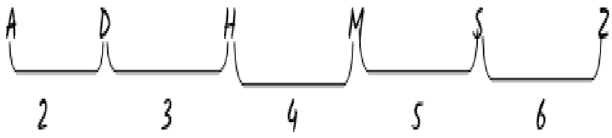

श्रृंखला क्रमशः +2, +3, +4........के क्रम से बढ़ रही है।

घटाना:- इसमें कोई निश्चित अंक घटाकर series का अगला अक्षर ज्ञात करते है ।

Ex - निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?)के स्थान पर क्या आएगा ?

P, M, J ,G, D, ?

Ans: P , M , J , G , D ,?

16 13 10 7 4

16-3 = 13

13-3 = 10

10-3 = 7

7-3 = 4

4-3 = 1 = A

इसमें हर अक्षर में 3 घटाया जा रहा है इसलिए अगला अक्षर A होगा ।

जोड़ना – घटाना :- इसमें कोई निश्चित अंक को जोड़कर और घटाकर series का अगला अक्षर ज्ञात करते हैं ।

Ex – निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा ?

A,EC,G,E,I,?

Ans: A, E, C, G, E, I, ?

1 5 3 7 5 9

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

1 + 4 = 5
5 - 2 = 3
3 + 4 = 7
7 - 2 = 5
5 + 4 = 9
9 + 2 = 7 = G

यहाँ पर एक बार 4 जोड़ा जा रहा है और एक बार 2 घटाया जा रहा है ।

एकांतर (बारी – बारी) :-इस type की series में एक-एक या 2-2 स्थान छोड़कर series का अगला अक्षर ज्ञात करते हैं।

Ex – निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा ?

B , B , A , D ,Z ,F ,Y ,H ,X , ?

Ans: B , B , A , D, Z , F ,Y , H , X , **J**

2 2 1 4 26 6 25 8 24 10

श्रृंखला दो भागो में विभाजीत है, पहला भाग -1 और दूसरा भाग +2 से बढ़ता जाता है अतः अगला अक्षर J होगा ।

विपरीत या लोटती श्रृंखला:- इसमें series जोड़े या घटाए जाने वाला नंबर पहले बढ़ता है फिर घटता है ।

Ex - निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा ?

A ,B , D , G , K , N ,P , ?

Ans: A, B, D, G, K, N, P, ?

1 2 4 7 11 14 16

1 + 1 = 2
2 + 2 = 4
4 + 3 = 7
7 + 4 = 11
11 + 3 = 14
14 + 2 = 16
16 + 1 = 17 = Q Ans

यहाँ श्रृंखला पहले 1 से लेकर 4 तक बड़ा फिर 4 से 1 तक वापस लोटा

तीव्रता श्रृंखला :- इसमें अक्षर की तीव्रता को बढ़ाते या घटाते हैं । **जैसे :**

Ex - निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?)के स्थान पर क्या आएगा ?

ABC, AABC ,AABBC,AABBCC, ?

ANS: इसमें series में पहले A बड़ा फिर अगले शब्द में एक B बड़ा उससे अगले शब्द में C बड़ा मतलब हम कह सकते हैं की अब जो अगला शब्द होगा उसमें एक A और बढ़ेगा मतलब अगला शब्द AAABBCC होगा ।

अक्षर व्यवस्था क्रम श्रृंखला:- इसके अंतर्गत प्रत्येक आगे का अक्षर केवल नियमित व्यवस्था क्रम पर आधारित होता है ।

Ex - निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?)के स्थान पर क्या आएगा ?

KVS , VSK , SKV , ?

ANS: यहाँ KVS और VSK में पहले अक्षर K को अंत में कर दिया है और दुसरे अक्षर V को सबसे पहले रखा गया है और अंतिम अक्षर S को बीच में रखा गया है इसी पेटर्न को हम प्रश्नवाचक चिन्ह को पता करने में करेंगे ।

SKV का पहला अक्षर S को अंत में करेंगे और दुसरे अक्षर K को सबसे पहले रखेंगे और अंतिम अक्षर V को बीच में रखेंगे तो नया शब्द बनेगा

KVS और यही हमें ज्ञात करना था ।

श्रृंखला का गलत पद ज्ञात करना :-

इसमें कुछ अक्षर एक निश्चित पैटर्न पर आधारित होते हैं लेकिन इस श्रृंखला एक पद ऐसा होता है जो इस पैटर्न पर आधारित नहीं होता और वो ही हमें ज्ञात करना होता है - **जैसे:**

Ex- निम्नलिखित श्रृंखला में से कौन-सा पद गलत है ?

BD , AC , FH ,ED ,JL

ANS: B D , A C, F H , E D , J L

2 4 1 3 6 8 5 4 10 12

इस श्रृंखला में हम देख सकते हैं हर पद के बीच में 2-2 का अंतर है केवल ED को छोड़ कर मतलब जो गलत पद है वो **ED** है ।

Ex- उस विकल्प का चयन करें जो दी गयी श्रृंखला से संबंधित नहीं है।:

EC , H , HF , N , KI , U

(a)HF (b) EC (c) N (d) U

ANS: यहाँ पेटर्न इस प्रकार है :

E(5) + C(3) = H(8)

H(8) + F(6) = N(14)

K(11) + I(9) = **T(20)**

यहाँ U के बजाय T होना चाहिए इसलिए विकल्प **(d)** गलत है।

Mixed Series

मिश्रित श्रृंखला

इस प्रश्नावली के अन्तर्गत एक मिश्रित श्रृंखला दी जाती है जिसमें अक्षर, अंक, संकेत तीनों मिले होते हैं। दी गयी series के आधार पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना होता है।

Ex-निर्देश: दी गयी श्रृंखला को पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिये ।

M Q S T ∝ 2 # + 6 F π 7 R @ G H N 8 % 4 K 3 5

Ex- बाएँ से 12 वें सदस्य के दाहिने 8 वें सदस्य के बाएँ 16 वाँ सदस्य कौन सा होगा ?

Solutions. $L_{12} - R_8 - L_{16}$

$= L_{20} - L_{16}$

$\Rightarrow L_4 = T$ Ans.

Ex- यदि ठीक बीच वाले सदस्य को स्थिर रख कर दोनों आधे भाग के सदस्यों को उल्टे क्रम में लिख दिया जाये तो 2 तथा % के बीच कितने अक्षर होंगे ?

Soly.

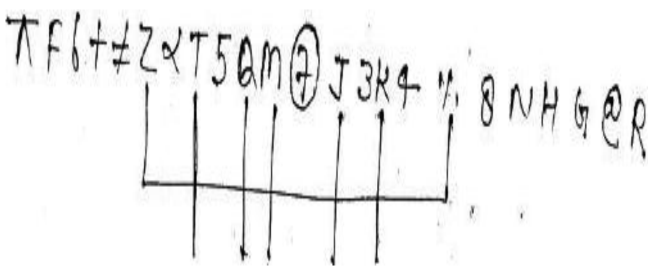

⇒5 अक्षर Ans.

Ex- दी गयी श्रृंखला में ऐसे कितने अंक है जिनके ठीक पहले अक्षर और ठीक बाद में संकेत है ?

Solutions. N (8)

⇒ 1 Ans.

Ex-भिन्न छांटो या विषम छांटो ।

(a) M T ≠ (c) 2 6 7

(b) + F 7 (d) G 8 K

Ans. (b) + F 7

Variable

Ex-अंग्रेजी वर्णमाला में यदि आरम्भ से 7 अक्षरों को उल्टे क्रम में लिख दिया जाये, फिर 8 अक्षरों को सही क्रम में लिखा जाये फिर 5 अक्षरों को उल्टे क्रम में लिख दिया जाये फिर शेष अक्षरों को भी उल्टे क्रम में लिख दिया जाये तो दाहिने से 17 वां अक्षर कौन सा होगा ?

Solutions. GFE DCBA, HIJKLMNO, TSRQP, ZYXWVU

= J **Ans**

OR

7654321, 8 9 10 11 12 13 14 15, 20 19 18 17 16, 26 25 24 23 22 21

= J Ans.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय-11

कैलेंडर (Calendar)

इस अध्याय/ परीक्षण से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं का ज्ञान अत्यावश्यक है-

⇒ वर्ष दो प्रकार के होते हैं-

(i) सामान्य वर्ष,

(ii) लीप वर्ष।

(i) सामान्य वर्ष में 365 दिन अर्थात 52 सप्ताह और एक दिन होता है।

(ii) लीप वर्ष में 366 दिन होते हैं तथा लीप वर्ष की गणना के लिए वर्ष को 4 से भाग देते हैं, वह वर्ष लीप वर्ष की श्रेणी में आता है।

- लीप वर्ष में 52 सप्ताह और 2 दिन होते हैं, क्योंकि लीप वर्ष में फरवरी 29 दिन की होती है।

(i) **सामान्य वर्ष-** वह वर्ष जिसमें 4 का पूरा-पूरा भाग नहीं जाए अर्थात अगर किसी वर्ष को हम 4 का भाग देने पर शेषफल शून्य नहीं आए।

जैसे – 1991, 1997, 2007, 2009, 2013 इत्यादि।

(ii) Leapyear (लीप वर्ष) – वह वर्ष जिसमें 4 का पूरा-पूरा भाग चल जाए अर्थात अगर किसी वर्ष में हम 4 का भाग देने पर शेषफ़ल शून्य आए।

जैसे– 1998, 2000, 2004, 2008, 2014, इत्यादि।

नोट:- जिस संख्या में भाग दिया जाता है, वह संख्या **भाज्य** कहलाती है। जिस संख्या से भाग दिया जाता है, वह संख्या **भाजक** कहलाती है, किसी संख्या को भाग देने पर जो परिणाम प्राप्त होता है, वह **भागफल** कहलाता है। भाग की प्रक्रिया पूरी होने पर नीचे जो संख्या बच जाती है वही बची हुई संख्या **शेषफ़ल** कहलाती है।

```
4)1991(497
  16
  ----
   39
   36
   ----
    31
    28
    ----
     3
```

भाज्य	=	4
भाजक	=	1991
भागफल	=	497
शेषफ़ल	=	3

⇒ एक वर्ष में 12 महीने होते हैं। वर्ष में जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसंबर 31 दिन के होते हैं।

⇒ अप्रैल, जून, सितंबर और नवंबर 30 दिन के होते हैं।

⇒ लीप वर्ष में फरवरी 29 दिन की होती है तथा सामान्य वर्ष में फरवरी 28 दिन की होती है।

⇒ कैलेंडर में सत्र जनवरी से शुरू व दिसंबर पर खत्म होता है। तथा हिन्दी महीनों व भारतीय परंपरा के अनुसार, वर्ष अप्रैल से शुरू और मार्च पर खत्म होता है।

⇒ एक सप्ताह में सात 7 दिन होते हैं, प्रत्येक 7 दिन के बाद वही दिन आ जाता है अर्थात सामान्य रूप से रविवार को सप्ताह का पहला दिन माना जाता है।

⇒ दिनों की संख्या 7 होती है, जिन्हे हम सात नामों से जानते हैं – जैसे रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार), शुक्रवार और शनिवार।

⇒ 7, 14, 21, 28, 35, 42, 49, 56, 63, 70

Trick-ट्रिक

कैलेंडर संबंधित प्रश्नों को हल करने के लिए कुछ ट्रिक और कोड-

माह/महिना का कोड

जन.	फ.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6

0	3		लीप वर्ष में जनवरी और फरवरी के माह कोड में अंतर आता है, बाकी समान होते हैं।

शताब्दी कोड

1600	1700	1800	1900	2000
6	4	2	0	6

∴ शताब्दी कोड में मुख्यतः 6, 4, 2, 0 ही कोड आते हैं।

शताब्दी कोड निकालने की ट्रिक –

वार/दिन	कोड
रविवार	1
सोमवार	2
मंगलवार	3
बुधवार	4
गुरुवार	5
शुक्रवार	6
शनिवार	0

$\frac{\text{शताब्दी}}{400} =$

Ex - $\frac{900}{400} \Rightarrow$ 100 – 4

(ii) $\frac{2300}{400} \Rightarrow$ 300 – 0

सूत्र-

$$\frac{\text{तारीख} + \text{माहकोड} + \text{वर्ष} + \text{लीप वर्ष} + \text{शताब्दी}}{7}$$

प्रश्नों के प्रकार

1. 26 जनवरी 1950 को क्या दिन था?

हल:

सूत्र = $\frac{\text{तारीख+माह कोड+वर्ष+लीप वर्ष+शताब्दी}}{7}$

लीपवर्ष = 4)50(12
48
2

लीपवर्ष = 12

= $\frac{26+1+50+12+0}{7}$

= $\frac{89}{7}$ = 5 (गुरुवार)

7)89(12
84
5 (वार/दिन)

2. 18 मार्च 2002 को सोमवार हो, तो 15 सितंबर 2007 को क्या वार होगा?

हल:

[∴ शताब्दी समान होने पर शताब्दी कोड नहीं लिखे हैं।]

18 मार्च 2002

सूत्र = $\frac{\text{तारीख+माहकोड+वर्ष+लीप वर्ष+शताब्दी}}{7}$

= $\frac{18+4+2+0}{7}$ = $\frac{24}{7}$ = 3 (मंगलवार)

∴ हमारे हल करने पर 18 मार्च को मंगलवार पड़ता है, तो हम सोमवार (प्रश्नानुसार) के लिए एक कम करेंगे।

15 सितंबर 2007

= $\frac{15+6+7+1}{7}$ = $\frac{29}{7}$ = 1 (रविवार)

∴ रविवार – 1 = शनिवार

अतः 15 सितंबर 2007 को शनिवार होगा।

प्रथम 300 वर्षों में विषम दिनों की संख्या 3 x 5 = 15 दिन

विषम दिन = $\frac{15}{7}$ = 1 दिन

प्रथम 400 वर्षों में विषम दिनों की संख्या 4 x 5 + 1 = 21 दिन

विषम दिन = $\frac{21}{7}$ = 0 दिन

Q. 9. यदि आज मंगलवार है तो 50 दिन बाद कौन सा वार होगा?

= विषम दिन मंगलवार + 1 = बुधवार

Q. 10. 21 नवंबर 2018 के 5 दिन बाद कौन सी तारीख होगी?

हल

21 + 5 = 26 तारीख

Q. 11. 21 नवंबर 2018 के बाद 5 दिन के बाद कौन सी तारीख होगी ?

हल:21 + 5 + 1 = 27 तारीख

Q. 12. 21 नवंबर 2018 के 5 दिन पहले कौन सी तारीख थी?

हल:

21 – 5 = 16 तारीख

Q. 13. 21 नवंबर 2018 के 5 दिन के पहले कौन सी तारीख थी?

हल:

21 – 5 – 1 = 15 तारीख

Q. 14. यदि आज शुक्रवार है तो आज से 31 दिन पहले कौन सा वार था?

हल:

$\frac{31}{7}$ = 3

शुक्रवार - 3 दिन पहले = मंगलवार

Q.15. यदि आज शुक्रवार है तो आज से 31 दिन बाद कौन सा वार था?

हल:

$\frac{31}{7}$ =3

शुक्रवार + 3 = सोमवार

Q.16. यदि आज बुधवार है तो आज के 53 दिन के बाद कौनसा वार होगा?

हल:

$\frac{53}{7}$ = 4 शेषफ़ल

बुधवार + 4 + 1 ⇒सोमवार

Q.17. यदि आज शनिवार है तो आज से 700 दिन बाद कौन-सा वार होगा?

हल:

$\frac{700}{7}$= 0 शेषफल

शनिवार + 0 = शनिवार

Q.18. 21 नवंबर 2018 को बुधवार है तो 27 दिसंबर 2018 को कौन-सा वार होगा?

हल:

21 नवंबर 2018 ⇒बुधवार

27 दिसंबर 2018 ⇒?

= 30 – 21 + 27 = 9 + 27

$\frac{36}{7}$ = 1 शेषफल = बुधवार + 1 = गुरुवार

<u>नोट:-</u> दो तारीखों के बीच दिनों की कुल संख्या में दोनों तारीखों में से केवल 1 तारीख का दिन जोड़ा जाता है|

Q. 19. 21 नवंबर 2018 को बुधवार हो, तो 15 जनवरी 2019 को कौन-सा वार है?

हल:

Type 1st 9+ 31 + 15= $\frac{55}{7}$ = 6 शेषफल

बुधवार + 6 = मंगलवार

Type 2nd विषम दिन = 9 + 3 + 15 = 2 + 3 + 1

बुधवार + 6 = मंगलवार

Q. 20. 21 नवंबर 2018 को रविवार है तो 5 जुलाई 2019 को कौनसा वार होगा?

हल:

9 + 31 + 31 + 28 + 31 + 30 + 31 + 30 + 7

उदाहरण 2. दिए गए प्रश्न में कौनसी आकृति प्रश्न आकृति के प्रतिरूप को पूरा करेगी ?

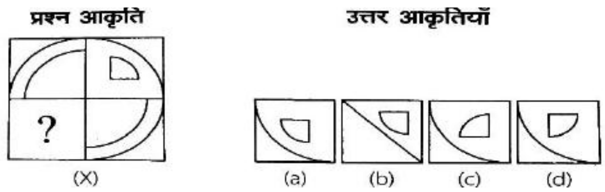

उत्तर-(a) यहाँ आकृति के विकर्णवत डिजाइन एकसमान हैं । अतः दी गई आकृति को 180° दक्षिणावर्त घुमाने पर,

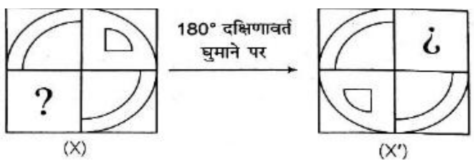

अब, आकृति (X) तथा (X') की तुलना करने पर,

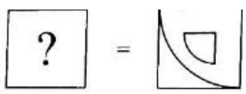

अब, प्रश्न आकृति का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने के बाद ज्ञात होता है कि आकृति के लुप्त भाग के साथ उत्तर आकृति (a) को मिलाने पर डिजाइन पूरा हो जाता है तथा निम्न रूप में दिखता है ।

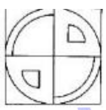

Type-3 संलग्न भाग क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर रूप से प्रतिबिम्ब होना-

इस प्रकार के अंतर्गत आने वाले प्रश्नों में दी गई आकृति के संलग्न भाग क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर रूप से एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब होते हैं

जैसे-

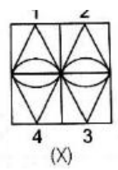

आकृति (X) में 1 तथा 2 ऊर्ध्वाधर रूप से एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं । इसी प्रकार, 3 तथा 4 ऊर्ध्वाधर रूप से एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं । इसी प्रकार, 1-4 तथा 2-3 क्षैतिज रूप से एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं ।

यदि किसी आकृति का कोई भाग लुप्त है, तो उसके ऊर्ध्वाधर या क्षैतिज प्रतिबिम्ब की तुलना द्वारा उत्तर ज्ञात किया जा सकता है ।

उदाहरण 3. दिए गए प्रश्न में कौन-सी आकृति प्रश्न आकृति के प्रतिरूप को पूरा करेगी ?

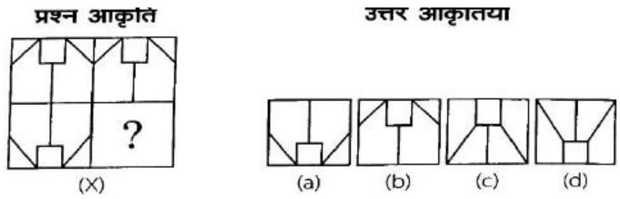

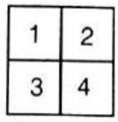

उत्तर-(a) यहाँ आकृति के उपरोक्त दोनों भाग अर्थात् (1) तथा (2) एक-दूसरे के ऊर्ध्वाधर प्रतिबिम्ब हैं । इसी प्रकार, 3 तथा 4 ऊर्ध्वाधर प्रतिबिम्ब हैं । इसी प्रकार, 1-3 तथा 2-4 क्षैतिज रूप से एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं । डिजाइन संख्या 2 का प्रतिबिम्ब विकल्प (a) वाला डिजाइन है ।

Type-4 किसी निश्चित डिजाइन या पैटर्न पर आधारित

इस प्रकार के अंतर्गत आने वाले प्रश्नों में आकृति के किसी एक भाग में प्रश्नवाचक चिह्न (?) बना होता है, जिसके स्थान पर दिए गए विकल्पों में से विश्लेषण के आधार पर पैटर्न या निश्चित डिजाइन को पूरा करने वाले विकल्प का चयन करते हैं ।

उदाहरण 4. दिए गए प्रश्न में कौन-सी आकृति प्रश्न आकृति के प्रतिरूप को पूरा करेगी ?

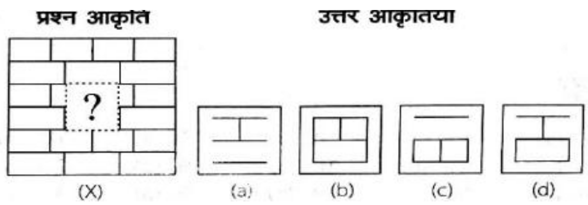

हल- (d) दी गई प्रश्न आकृति का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर विकल्प (d) की आकृति रखने से प्रश्न आकृति का प्रतिरूप पूरा हो जाएगा तथा वह निम्न रूप में दिखेगा ।

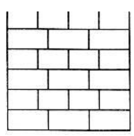

अभ्यास प्रश्न

निर्देश (प्र. सं. 1-49) निम्नलिखित उत्तर आकृतियों में से कौनसी आकृति प्रश्न आकृति को पूरा करती है?

1. Question Figure: **Answer Figures:**

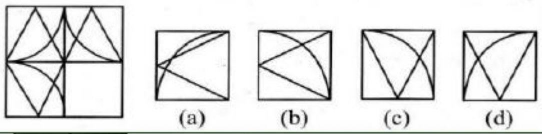

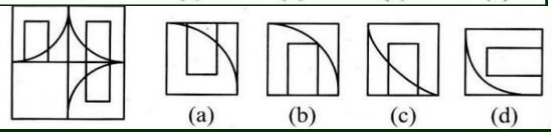

3. Question Figure: **Answer Figures:**

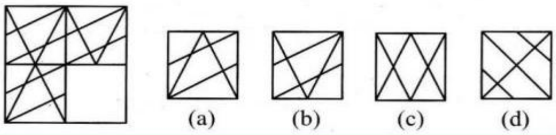

4. Question Figure: **Answer Figures:**

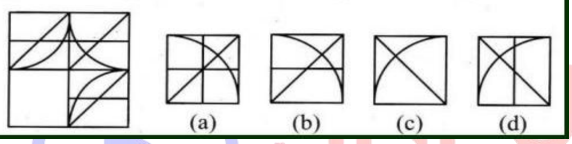

5. Question Figure: **Answer Figures:**

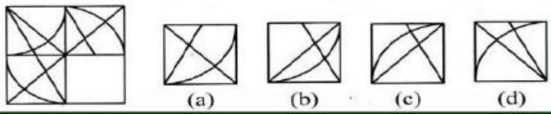

6. Question Figure: **Answer Figures:**

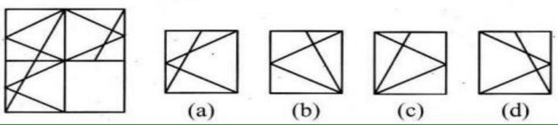

7. Question Figure: **Answer Figures:**

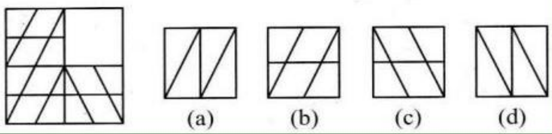

8. Question Figure: **Answer Figures:**

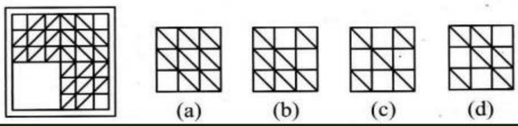

9. Question Figure: **Answer Figures:**

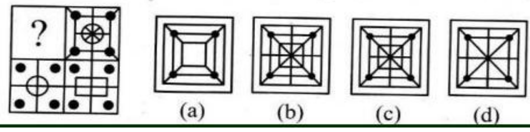

10. Question Figure: **Answer Figures:**

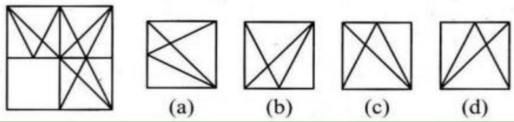

11. Question Figure: **Answer Figures:**

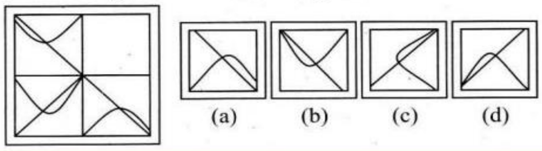

INFUSION NOTES
WHEN ONLY

12. Question Figure: **Answer Figures:**

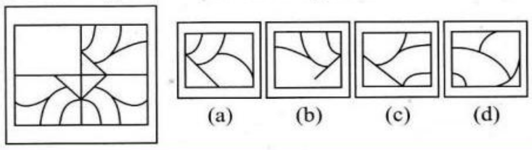

13. Question Figure: **Answer Figures:**

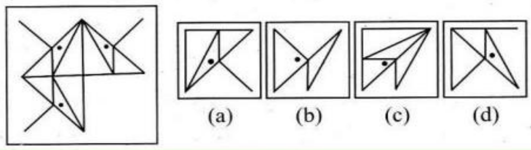

14. Question Figure: **Answer Figures:**

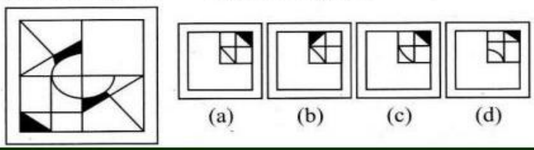

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/l6dgy4

Online order – https://bit.ly/bstc-notes

Call करें - 9887809083